'उधार माँगना भी एक कला है'

–डा0 बरसाने लाल चतुर्वेदी

लेखक–परिचय

चतुर्वेदी होने के नाते डा0 बरसाने लाल चतुर्वेदी अपने जन्म–सिद्ध अधिकार से हास्य के स्रष्टा तो बहुत पहले से हैं किन्तु 'हिन्दी साहित्य में हास्य–रस' के द्वारा (जो आगरा विश्वविद्यालय द्वारा पी–एच. डी. उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबंध है) वे हास्य के कुशल विवेचक और सिद्धान्त प्रतिपादक के रूप में भी हमारे सामने आते हैं। 'हाथी के पंख' लेखक की कहानियों तथा निबन्धों का संग्रह है। इसमें पारिवारिक समस्याओं को लेकर हास्यरस की सृष्टि की गई है। इसमें वाक्–छल, व्यंग्य एवं स्मित, हास्य के तीनों प्रभेदों का प्रयोग किया गया है। 'चाटुकारिता एक कला है', 'बरात की बात' एवं 'श्री मुफ्तानन्द जी से मिलिए' हास्य–रसपूर्ण सुन्दर निबन्ध है। इनकी शैली विचारात्मक है। स्मित हास्य की सुन्दर सृष्टि हुई है। भाषा सरल है; विचारों को बोधगम्य करने में पाठक को परिश्रम नहीं करना पड़ता। विश्लेषण स्पष्ट है।

पाठ–परिचय

हास्य–व्यंग्य के सशक्त हस्ताक्षर डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी कृत व्यंग्य लेख उधार माँगना भी एक कला है' में उधार माँगने के तरीके उधार–सम्प्रदाय के लोगों के चरित्र, उनका बेहयाई युक्त जीवन तथा क्रियाकलाप को दिखाया गया है। किस प्रकार खुशामद कर, चाय पिलाकर उधार देने हेतु तैयार करना, फिर मोटी चमड़ी वाला बनकर देने के नाम पर विविध बहाने करना, भूल जाना, स्मरण कराने पर क्या आपका रुपया लेकर मैं भाग जाऊँगा' जैसे वाक्य से सामने वाले को निरुत्तर करना आदि का इस व्यंग्य लेख में चित्रण किया गया है। शैली विचार प्रधान, भाषा सरल एवं बोधगम्य है।

**** ****

यदि आप चाहते हैं कि बिना पूँजी के कोई व्यापार प्रारम्भ किया जाय तो उधार माँगने की कला का अभ्यास कीजिये, 'हल्दी लगे न फिटकरी, रंग चोखा हो जाए'। लेकिन यदि आप इस काम को आसान समझ रहे हैं तो यह आपकी भूल होगी। इसके लिए आपको बाकायदा ट्रेनिंग लेनी होगी। 'बिनु गुरु ज्ञान न होई'। किसी ऐसे उस्ताद की शागिर्दी करनी पड़ेगी, जो इस विषय का माना हुआ विद्वान हो। यदि आपको शिकार का शौक रहा हो तो आप इस कला को शीघ्र समझ सकते हैं। वह एक पंछी के समान होता है जिसका शिकार किया जाता है। निशाने के हिसाब से यह शिकार करने से भी कठिन है। शिकार

में एक बार निशाना चूक जाये तो कोई विशेष नुकसान नहीं, किन्तु उधार माँगने में यदि एक बार आपका निशाना खाली गया तो समझिये वह शिकार तो आपको फिर मिलने से रहा।

जिस प्रकार देवी पर बलि चढ़ाने से पूर्व बलि–पशु को पौष्टिक भोजन कराया जाता है, उसी प्रकार जिससे उधार लेना होता है, उसको भी पूर्व राग के रूप में खूब चाय पिलायी जाती है, खुशामद रूपी पालिश से प्रसन्न किया जाता है। अंग्रेजी में एक कहावत है कि लोहे को तब पीटो जब वह गर्म हो, इसलिए यह बड़ा आवश्यक है कि शिकार जैसे ही तैयार हो जाये, तुरन्त उसका करम कल्ला कर देना चाहिए। ''का बरखा जब कृषि सुखाने''? यदि समय पर मौका चूक गये तो फिर सफलता मिलना उतना ही कठिन है, जितना उस गाड़ी का मिलना जो प्लेटफार्म छोड़ चुकी हो।

यदि आपको इस कला में पारंगत होना है तो अपनी चमड़ी को मोटा बनाइये। गीता के इस सिद्धान्त को मानना प्रारम्भ कीजिए कि मान–अपमान दोनों बराबर है 'स्थितप्रज्ञ' बन जाइये। उधार लेकर देना भूल जाइये। भले आदमी वापस माँगते ही नहीं हैं, कुछ हैं जो माँगते है। दोनों को एक समान समझिये।

मेरे प्रिय मित्र मक्खनलाल मेरे यहाँ पधारे। रिक्शा छोड़कर झटके के साथ आकर बोले, ''तुम पर एक रुपया है क्या?'' मैंने रुपया तुरन्त दे दिया। आज एक वर्ष हो गया। शायद वे रुपया देना भूल गये। बीच में वे प्रवास में रहे। वहाँ से उनका एक पत्र आया। मैंने बड़ी उत्सुकता से खोला, सोचा, उसमें रुपया होगा। उसमें लिखा था, ''मैं यहाँ राजी खुशी हूँ, तुम्हारी राजी खुशी जमुनाजी से मनाता हूँ। मौसम बड़ा अच्छा है।'' जब वे लौटे, मैं स्टेशन पर उनके स्वागत को गया। मैं उन्हें लेने गया कि मेरी विनयशीलता का उन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। रास्ते में उस रुपये को छोड़कर सब बातें हुई। एक दिन यह सोचा कि उनसे पूछूँ कि कहीं उस रुपये के बारे में भूल तो नहीं गये, पर हिम्मत नहीं पड़ी। आखिर संतोष करके बैठ गया।

सचमुच कुछ लोगों को उधार लेने का शौक होता है। उनका संप्रदाय ही अलग होता है। ये सज्जन आपको दफ्तरों में, विद्यालयों में, मिलों में एवं जीवन के अन्य क्षेत्रों में मिलेंगे। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि ये आवश्यकता के कारण उधार नहीं लेते, केवल शौक को पूरा करने के लिए लेते हैं। यह ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत' सिद्धान्त के मानने वाले हैं। सुख से जीते हैं, अच्छा पहनते हैं, मलाई उड़ाते हैं और जिनसे लेते है, उन्हें हरी झंडी दिखाते हैं। दर्जी से उधार कपड़ा सिलवाते हैं, बाजार से उधार कपड़ा लेते हैं और ठाठ से बाज़ार में निकलते हैं कि आप कहेंगे कि काठ की हांडी तो एक बार ही चढ़ती है। ठीक है, पर क्या दर्जी एक ही है? क्या बाजार दूसरे नहीं हैं? इनके विभाग में अस्थायी नियुक्तियाँ होती है। जिस दर्जी का उधार है उसकी दुकान के रास्ते जाने से इन्हें क्या काम? रास्ते तो अनेक हैं। यदि दुर्भाग्य से कभी मुलाकात हो भी जाए तो पेटेंट नुस्खा तैयार है, ''भाई अभी वेतन नहीं मिला।'' प्रायः सभी शौकिया उधार लेने वाले इस बहाने को पेंसिलीन के इंजेक्शन की तरह प्रयोग करते हैं। अपने राम भी एक दिन अपने शिकार के दफ्तर पहुँच गये। जिनसे भी उनके बारे में पूछते, वे मुस्करा देते। यह मुस्कान अजीब लगी। एक सज्जन, जो अधिक आत्मीय थे, अलग ले जाकर बोले, ''आपने व्यर्थ तकलीफ की। दिन भर लोग यही पूछने आते हैं। आप जानते हैं, यह सरकारी दफ्तर है? इसमें हर पहली तारीख को वेतन मिल जाता है।'' मैं चुपचाप उनसे बिना मिले अपने मन में उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ अपने घर लौट आया।

जो बड़े कलाकार होते हैं, वे बैंक की पास बुक तथा चैक दोनों अपनी जेब में रखते हैं। आपसे रुपया लिया और एक महीने आगे की तारीख का चैक आपके हवाले किया। उनका रुपया शीघ्र ही जमा

होने वाला होता है, जो कि कभी जमा नहीं होता है, आप प्रेम से उस चैक को शहद लगाकर चाटिए।

जैसे अंकगणित के सवाल कई कायदों से निकल जाते हैं, बस उत्तर सही आना चाहिए। उसी प्रकार उधार संप्रदाय के मानने वाले नकदी पर ही जोर नहीं देते, सामग्री भी स्वीकार कर लेते हैं। कोई बड़े अफसर होकर आये हैं। उनकी गृहस्थी की सामग्री नीचे वाले लोग ला रहे हैं। जानते हैं कि साहब इकट्ठा ही हिसाब कर देंगे। फिर वक्त बीतता है। इधर आप शिष्टाचारवश साहब को याद नहीं दिलाते और साहब को याद आने ही क्यों लगी?

आप जानते हैं कि जनाब वसूल करने वाले भी बड़े बुरे होते हैं। यह शिकारी की रियाज पर निर्भर करता है। बहाने अनन्त हैं घर में तथाकथित बीमारी हो जाने से बजट का सन्तुलन बिगड़ जाना, उनका स्वयं का रूपया दूसरों पर फँस जाना, उनका स्वयं का अस्वस्थ हो जाना आदि–आदि। शिकार स्वयं ही आत्म–समर्पण कर देते हैं।

आपका शिकार यदि किसी ऊँचे शिकारी ने किया हो और फिर कहीं आपने उनसे कड़ाई से रूपया माँगने की जुर्रत की हो तो आपको ये वाक्यांश अवश्य सुनने होंगे–''क्या आपका रूपया लेकर मैं भाग जाऊँगा?'' ''आपने अपने–आपको समझ क्या रखा है, हमारी भी इज्जत है'', ''आपको बार–बार याद दिलाने की कोई आवश्यकता नहीं, मुझे स्वयं ख्याल है।'' इस समय आप उस शुभ घड़ी को बार–बार याद कर रहे होंगे, जब आपका उनका प्रेम व्यवहार प्रारम्भ हुआ होगा।

इस सम्प्रदाय में इस बात का तनिक भी ख्याल नहीं किया जाता कि लोग हमारे बारे में क्या कहते हैं। इस सम्प्रदाय में बड़े से बड़े उस्ताद पड़े हुए हैं। एक पार्टी में एक सज्जन से पूछा गया, ''संसार का सारा धन यदि आपको मिल जाए तो आप क्या करियेगा?''

वे तपाक से बोले –''भाई मैं तो उस धन से अपना ऋण चुकाऊँगा, जितना भी चुक पावेगा।''

तो जनाब, ऐसे ही किसी सिद्धि प्राप्त गुरु से ट्रेनिंग लीजिये, बस पाँचों अंगुलियाँ घी में मानिये (और सर कड़ाही में!)।

शब्दार्थ–

शागिर्दी– शिष्यत्व;
ऋणं कृत्वा घतृं पिबेत्– ऋण लेकर घी पीना;
स्थितप्रज्ञ– समभाव वाली स्थिति;
अर्पित– देना, अर्पण करना।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. बिना पूँजी व्यापार प्रारम्भ करने के लिए –
   (क) बैंक से ऋण लेना चाहिए
   (ख) सहकारी समिति से सहयोग लेना चाहिए
   (ग) मित्रों से सहयोग लेना चाहिए
   (घ) उधार माँगने की कला का अभ्यास करना चाहिए। ( )
2. यदि आपको उधार माँगने की कला में पारंगत होना है तो सर्वप्रथम–
   (क) बड़े लोगों में रहिए (ख) स्वयं को प्रभावशाली बनाइये
   (ग) ऊँची पार्टियों में जाइये (घ) अपनी चमड़ी को मोटा बनाइये ( )

3. प्रायः सभी शौकिया उधार लेने वाले इस बहाने को पेंसिलीन के इंजेक्शन की तरह प्रयोग करते है–
   (क) कल दे दूँगा (ख) अभी पैसा नहीं है
   (ग) आपका पैसा देना है (घ) भाई अभी वेतन नहीं मिला है ( )
4. पाँचों अंगुलियाँ घी में (और सर कड़ाही में) का तात्पर्य है–
   (क) पौष्टिक भोजन करना (ख) धृत युक्त पकवान में रहना
   (ग) आराम युक्त जीवन जीना (घ) सब ओर से लाभ ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. जिससे उधार लेना होता है उसके साथ पूर्वराग के रूप में क्या करना चाहिए?
2. ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत' सिद्धान्त क्या है?
3. जो बड़े कलाकार होते हैं वो अपने साथ क्या रखते हैं?
4. लेखक के मित्र मक्खनलाल ने पत्र में क्या लिखा?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. उधार माँगने वालों के लिए गीता में एक सिद्धान्त कौनसा है और क्या है?
2. 'एक सज्जन से पूछा कि संसार का सारा धन यदि आपको मिल जाय तो आप क्या करियेगा?'' इस पर लेखक को उक्त सज्जन ने क्या उत्तर दिया?
3. बिना गुरु के किसकी प्राप्ति नहीं हो सकती है और क्यों?
4. उधार सम्प्रदाय के मानने वाले कहाँ मिलेंगे?

निबंधात्मक प्रश्न–

1. 'उधार माँगना भी एक कला है।' पाठ का सार अपने शब्दों में लिखिए।
2. पठित पाठ के आधार पर उधार सम्प्रदाय के लोगों का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. आपका शिकार किसी बड़े शिकारी ने किया हो तथा कड़ाई से अगर वसूली की जाय तो उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी?
4. 'हमारे देश का विकास उधार की बैसाखियों के सहारे हुआ है?' पठित पाठ के आधार पर अपने तार्किक विचार 200 शब्दों में लिखिए।

व्याख्यात्मक प्रश्न–

1. जिस प्रकार देवी..... छोड़ चुकी है।
2. सचमुच कुछ लोगों ..... एक बार ही चढ़ती है।
3. जैसे अंकगणित ..... क्यों लगी?

*****